Volume-4, Issue-4, April-2015 • ISSN No 2277 - 8160

Research Paper

Social Science

महात्मा गाँधी : महिलाओं के संदर्भ में विचार

डा. नीलम

ABSTRACT

इस लेख में महात्मा गांधीजी के द्वारा महिलाओं के प्रति सकारात्मक सोच को प्रदर्शित किया गया है। महात्मा गांधीजी के विचार आज के आधुनिक विचारों से भी ऊपर है। गांधीजी ने महिलाओं को समाज में महत्वपूर्ण दर्जा दिलाया तथा उन्हें आन्दोलन के साथ जोडकर महिलाओं के प्रति सम्मान व आदर का भाव जाग्रत किया। गांधीजी के प्रयत्नों से महिलाओं के राजनीतिक एवं सार्वजनिक जीवन में एक नया आत्मविश्वास पैदा हुआ।

KEYWORDS : समाज, राजनीति, स्वतंत्रता आंदोलन, मानसिकता

परिचय

महात्मा गांधीजी को भारत के राष्ट्रपिता के नाम से सम्बोधित किया जाता है। उनका जन्म 2 अक्टूबर 1869 को गुजरात में पोरबन्दर नामक स्थान पर हुआ। वे आधुनिक भारत के महान समाज सुधारक एवम् नैतिक दार्शनिक थे। दक्षिण अफ्रीका में महात्मा गाँधी ने रंगभेद कि नीति के खिलाफ काफी संघर्ष किया जिससे उनकी प्रसिद्धि न केवल भारत में बल्कि विदेशों में भी रही है। आज भी गाँधी जी को उनके विचारों व कार्यो के लिए बहुत सम्मान, आदर व महत्व दिया जाता है।गांधीजी ने अपने अनुयायियो समेत देशभर के लोगों को एकत्र कर अहिंसा पर बल देते हुए असहयोग आंदोलन की शुरुआत की। उन्होंने भारतीय नागरिकों को विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करने व स्वदेशी चीजों को अपनाने पर ज़ोर दिया। 1930 में गांधीजी ने नमक कानून तोड़ने के लिए दांडी यात्रा का प्रारम्भ की तथा सफल रहे। 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन चलाया। इस प्रकार गांधीजी का योगदान भारत के स्वतंत्रता संघर्ष में काफ़ी महत्वपूर्ण रहा। महात्मा गांधीजी के विचार अनेक पुस्तकों, लेखों में स्पष्ट दिखाई देते है। अपनी आत्मकथा 'सत्य के मेरे प्रयोग' (My Experiments With Truth) के अंतर्गत उन्होंने अपने जीवन के अनुभवों को व्यक्त किया है।

भारतीय समाज एवम महिलाएं

महिलाओं के संदर्भ में गांधीजी के विचार अपने आप में ही अनूठे एवम् महत्वपूर्ण रहे है। जस्टिस रानाडे ने कहा था कि "हम लोग पूरी जिंदगी में महिलाओं के हित में जितना नही कर पाएंगे महात्मा गाँधीजी एक दिन में कर देते थे।गांधीजी आत्मत्याग, सहनशीलता, अहिंसा जैसे गुणों को भारतीय नारी के स्वाभाविक गुण बताते है।गांधीजी के अनुसार महिलाएं अपने नैतिक व आध्यात्मिक गुणों से न केवल पुरूषों की मार्गदर्शक है बल्कि पाश्चात्य महिलाएं भी भारतीय महिलाओं से इन गुणों को सीख सकती है।उनका मत था कि जिस समाज में लैंगिक समानता होगी वह समाज शांतिपूर्ण व न्याय पर आधारित होगा।उनका मानना था कि यदि हमारे धर्मग्रंथ अनैतिक कार्यों को हमारे ऊपर लादने की कोशिश करे तो महिलाओं को चाहिए की वह उसका पुरज़ोर विरोध करे। अनैतिकता को धर्म के नाम पर कभी भी सहन न करे। गांधीजी महिलाओं की दीन- हीन दशा के लिए ऐतिहासिक परिस्थितियों को मुख्य कारक मानते थे। महिलाओं की ऐसी दशा इसलिए हुई है क्योंकि सदियों से महिलाओं पर पुरूषों द्वारा आधिपत्य व शोषण किया गया जिसे महिलाएं सहन करती रही। जबकि ऋग्वैदिक काल में महिलाओं को पुरूषों के समान माना जाता था। उन्हें धर्म, कर्म यज्ञ आदि सभी कार्यों में समान रूप से शामिल किया जाता था।कहा गया कि प्राचीन समय से चली आ रही परम्पराएँ गलत कैसे हो सकती है? परन्तु इस पर गांधीजी का कहना था कि कोई भी चीज सिर्फ प्राचीन होने से सही या गलत नही हो सकती। पाप प्राचीन समय से हो रहा है तो उसके विषय में आप क्या कहेंगे ? ऐसे पुरातन धर्मग्रन्थो को नकार देना चाहिए जो पुरुष एवं महिला की समानता को महत्व न दे। महिलाओं के प्रति अन्याय व असमानता का विरोध करते हुए गाँधी जी ने कहा कि "यदि में स्त्री के रूप में पैदा होता तो में पुरूषों द्वारा थोपे गए किसी भी अन्याय का जमकर विरोध करता तथा उनके खिलाफ विद्रोह का झंडा बुलंद करता "।गाँधी जी हिन्दू कानूनों में उतराधिकार सम्बन्धी परिवर्तन व सुधार करने के पक्ष में थे। उनके मत में महिलाओं का पारिवारिक सम्पति में समान हिस्सा होना चाहिए।किसी भी प्रकार के क़ानूनी अधिकार से महिलाओं को वंचित नही करना चाहिए। गांधीजी यह प्रश्न उठाते थे कि 'क्यों महिलाएं पुरूषों के समान अधिकारों का उपभोग नही करती'।गांधीजी महिलाओं की शिक्षा के पक्षधर थे। उन्होंने लडकियों व लडको के लिए निशुल्क व अनिवार्य शिक्षा देने का प्रावधान किया। उनका कहना था कि महिला व पुरुष दोनों के लिए प्राथमिक शिक्षा का प्रश्न था गांधीजी का कहना था कि लडकियों के पाठ्यक्रम लडकों से अलग होने चाहिए क्योंकि कुछ समय बाद दोनों को अलग-अलग कार्य करने होते है।महिलाओं को मातृत्व व गृहणी के रूप में भूमिका निभानी है तो उन्हें गृह विज्ञानं जैसे विषय पढने चाहिए, ऐसे विषयों का अध्ययन करना चाहिए जिससे घर का संचालन व बच्चों की देखरेख करने में अधिक जानकारी प्राप्त हो सके। एक महिला परिवार व समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है इसलिए महिलाओ का शिक्षित होना परिवार, समाज, देश के उज्वल भविष्य का निर्माण करता है।

महिलाओ के प्रति होने वाले अत्याचारों एवम् सामाजिक बुराइयों का गाँधी जी विरोध करते थे। वेश्यावृत्ति, देवदासी प्रथा को गांधीजी 'सामाजिक बीमारी' मानते थे। वेश्यावृत्ति को समाप्त करने के साथ – साथ गाँधी जी वेश्यावृत्ति में लिप्त महिलाओं का पुनर्वास सबसे आवश्यक मानते है।गांधीजी दहेज प्रथा के पूर्णतया खिलाफ थे। गांधीजी का कहना था कि समाज से दहेज मांगने वालों का बहिष्कार करना चाहिए तथा कानून बनाकर दहेज प्रथा को समाप्त कर देना चाहिए। गांधीजी का कहना था कि अन्तर्जातीय व अंतर्सामुदायिक विवाह को प्रोत्साहन देना चाहिए। इसे समाप्त करने के लिए सभी लोगों में शिक्षा का प्रसार-प्रचार किया जाना चाहिए ताकि मानसिक तौर पर उनके विचारों में परिवर्तन किया जाए। सभी को आंतरिक रूप से अपनी सोच में परिवर्तन करना चाहिए तभी सामाजिक समाज से बहिष्कार किया जाना चाहिए।

गांधीजी बाल-विवाह, पर्दा-प्रथा के विरोधी थे तथा विधवा-पुर्नविवाह का पुरज़ोर समर्थन करते थे।गांधीजी सामाजिक बुराइयों को बर्बरतापूर्ण मानते थे।महात्मा गांधीजी की नजरों में बाल-विवाह शब्द विसंगतिपूर्ण था। यदि वह विधवा है तो बाल कैसे और यदि बाल है तो विधवा कैसे? उन्होंने सभी बाल-विधवाओ के माता-पिता से आग्रह किया कि आप लोग अपनी पुत्रियों का पुर्नविवाह करे।विधवा पुर्नविवाह के गांधीजी कट्टर समर्थक थे। उन्होंने कहा कि "पुर्नविवाह का जितना अधिकार विधुरो को है उतना ही विधवाओको भी है"। गांधीजी उस विधवापन के विरुद्ध थे जो महिलाओं पर थोपा गया है। परंतु स्वेच्छा से अपनाया हुआ विधवापन को गांधीजी सामाजिक विशेषता मानते थे। स्वेच्छा से और समझ-बुझकर अपने आप अपनाया गया वैधव्य जीवन गौरवपूर्ण है। गांधीजी ने ऐसी विधवाओं को राष्ट्र के प्रति समर्पित भाव से सेवा करने का सुझाव दिया।पर्दा प्रथा जैसी सामाजिक बुराई ने महिलाओ को भेड़ो और बकरियों की तरह सिकुड़ी –सिमटी रहने के लिए मजबूर कर दिया है।महिलाओ के लिए घर की दहलीज से पैर बाहर निकलना भी दूभर था उनके लिए तो सावर्जनिक सभाओ में

भाग लेना तो बहुत दूर की बात थी। गांधीजी ने महिलाओ के इस दर्द और आह को समझा तथा सम्पूर्ण भारतवासियों से यह आह्वान किया कि वे अपने घरों से पर्दा प्रथा को मिटा दे। गांधीजी के पर्दा प्रथा के विरुद संघर्ष का कट्टर हिन्दू और मुस्लिम दोनों विरोध कर रहे थे।गांधीजी सती प्रथा का भी विरोध करते थे। सती प्रथा भारतीय समाज की एक ऐसी बुराई है जो महिलाओं से उनका जीने का अधिकार तक छीन लेती है। जब किसी महिला का पति मर जाता है तो उसकी पत्नी को जीवित ही उसकी चिता में जला दिया जाता है।लोगों को सती प्रथा का विरोध करना चाहिए ताकि इस तरह की सामाजिक बुराई को समाप्त किया जा सके था महिलाओ को जीने का अधिकार मिल सके। महात्मा गांधीजी महिलाओं को अबला कहे जाने का विरोध करते थे। उन्होंने कभी भी अपने जीवन में महिलाओं को अबला नही माना। कोई भी दूसरा व्यक्ति महिलाओं की रक्षा नही कर सकता। द्रौपदी, सीता जैसी महिलाओं ने भी अपने आत्मबल के कारण ही अपनी रक्षा की थी।उनका विश्वास था कि पढ़ी-लिखी, समझदार एवं स्वावलंबी महिलाएं आगे आकर अपने से पिछड़ी महिलाओं का विकास करेंगी। पुरूषों के समकक्ष लाने और स्वतंत्रता दिलाने के लिए महिलाएं कभी भी महात्मा गांधीजी के ऋण से मुक्त नही हो पाएगी।

राष्ट्रीय आंदोलन एवम् महिलाएं

राष्ट्रीय आंदोलन की बात की जाए तो राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओ की काफी महत्वपूर्ण भूमिका थी। गाँधी जी ने राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओ की भागीदारी को बढ़ावा दिया। गांधीजी अपने भाषणों के माध्यम से महिलाओं को आंदोलन में शामिल करने का आह्वान करते थे।उन्होंने महिलाओं को भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के साथ जोडकर लोगों की सोच में परिवर्तन करने का प्रयास किया। जो महिलाएं घर से बाहर आकर आन्दोलन से जुड नही पाती थी उनके लिए घर पर रहकर खादी उद्योग व चरखा चलाकर स्वदेशी आंदोलन का हिस्सा बनाने के लिए प्रोत्साहित किया। 1921 के असहयोग आंदोलन में गांधीजी ने महिलाओं के संघर्ष को शामिल करके उन्हें राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन के साथ जोड़ दिया। महिलाओं ने असहयोग आंदोलन में सरकारी शिक्षण संस्थाओ, न्यायलयों, विधायिकाओं का बहिष्कार किया। दांडी यात्रा में नमक कानून तोडकर महिलाओं ने गांधीजी के साथ सक्रिय भूमिका निभाई। उन्होंने धरना, हड़ताल, प्रदर्शन में भाग लेकर सामाजिक प्रथाएँ एवं धार्मिक पूर्वाग्रहों का परित्याग कर दिया।

राजनीति एवम् महिलाएं

1921 में जब महिलाएं मताधिकार का मुद्दा उठा तो उन्होंने इसका पूरा समर्थन किया। गांधीजी महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी को बढ़ाने के लिए सदैव अग्रसर रहे।1925 में सरोजनी नायडू को काँग्रेस पार्टी के अध्यक्ष पद पर चयनित किया। 1931 में कराची अधिवेशन में कांग्रेस पार्टी ने महिलाओं की राजनीतिक समानता का समर्थन करते हुए एक प्रस्ताव पारित किया। एनी बेसेंट और सरोजनी नायडू जैसी महिला नेताओं के उदाहरण प्रस्तुत करके गांधीजी ने महिलाओं में जागरूकता प्रदान की ताकि उनकी राजनीतिक सहभागिता को बढ़ाया जा सके। गांधीजी का योगदान केवल राजनीतिक क्षेत्र में ही नही था बल्कि समाज के सभी वर्गों के प्रति उन्होंने उदारवादी दृष्टिकोण अपनाया। आज भारत की महिलाएं जिस मुकाम पर खड़ी है, उन्हें यहाँ तक लाने में गांधीजी की प्रयास सबसे अधिक रहा है।

यद्यपि महिलाओं के प्रति गांधीजी की सक्रिय भूमिका से इन्कार नहीं किया जा सकता। उन्होंने महिलाओं को आगे बढ़ाने में पूरा सहयोग दिया तथापि गांधीजी की सोच महिलाओं के प्रति हिन्दू पितृसतात्मकता से ऊपर नहीं उठ सकी। उन्होंने महिलाओं को पारिवारिक जिम्मेदारी सोंपी और महिलाओं व पुरूषों के कार्य क्षेत्र निश्चित किये। गांधीजी ने महिलाओं को किसी प्रकार के संरक्षण देने से इन्कार करते हुए महिलाओं के लिए आरक्षण का समर्थन नहीं किया। आरम्भ में महिलाओं को केवल शराब व विदेशी कपड़ो की दुकान पर धरना देने के ही काबिल समझा। वेश्याओं के प्रति गांधीजी का कहना था कि "वे समाज की अच्छाईयां चुराती थी" जब तक वे अपने आप को नहीं सुधारती , चरखा खादी नहीं अपनाती, उनमें आत्मत्याग जैसे गुण नहीं आते तब तक उन्हें आन्दोलन में शामिल नहीं किया जा सकता।गांधीजी महिलाओं के दोयम दर्जे को स्वीकार करते हुए यह मानते है कि अपने पति से अलग पत्नी का कोई अस्तित्व नहीं है। निसंदेह गांधीजी ने महिलाओं को हसिए पर रखा है। गांधीजी अर्न्तजातीय विवाहों का तो समर्थन करते थे लेकिन साथ ही उनके बच्चों के सम्बन्ध में मातृत्व के अधिकारों को अनदेखा न करते हुए पितृत्व के अधिकारों पर अधिक बल देते है।

उपसंहार

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि गाँधीजी भारतीय समाज की उन्नति और विकास के लिए महिलाओं के सुधार व विकास पर बल देते थे। महात्मा गांधीजी ने महिलाओं को आत्मान्नतिकरने और अपने निर्णय स्वयं लेने के लिए प्रोत्साहित किया। वह महिलाओं में त्याग,समर्पण, सादगी, सेवा की भावना को बढ़ावा देते है।गांधीजी का मत था कि क़ानूनी रूप से विषमताओं को दूर करना मात्र बाहरी उपचार है। वास्तविकता में आंतरिक रूप से इसकी जड़ का समूल विनाश करना जरुरी है। अर्थात् लोगों की मानसिकता में बदलाव आना आवश्यक है तभी इन बुराइयों को समाप्त किया जा सकता है।

REFERENCES

हरिजन, 'बूमेन इन स्म्रतिज' 1936,यंग इंडिया, 'दी हिन्दू वाइफ' 1929,एम.के.गाँधी, 'रचनात्मक कार्यक्रम', 1941, डी.जी.तेंदुलकर,महात्मा प्रकाशन विभाग, VOL.4A.,मधु किश्वर, 'गाँधी एंड वीमेन', मानुषी ट्रस्ट, 1986.,नवजीवन, 1924. VOL.24., पुष्पा जोशी, 'गाँधी ऑन वूमेन',नवजीवन पब्लिशिंग हॉउस,अहमदाबाद, यंग इंडिया, 'पोजीशन ऑफ वूमेन' 1929., सुजाता, 'बापू और स्त्री', वाराणसी, 2012.